M.A Sem-II ~~B~~M. A. Part-II, Paper-5 ([redacted] Psychology)

Topic :→ [Forgetting & Remembering] :-

प्रश्न :→ स्मरण के सम्बन्ध में इबिंगहॉस एवं बार्टलेट के दृष्टिकोण की समीक्षा करें। अथवा :- "स्मृति एक पुनरुत्पादक प्रक्रिया नहीं वरन् यह एक रचनात्मक प्रक्रिया है।" इस कथन की व्याख्या करें। [Discuss the Ebbinghaus and Bartlett's view-point about remembering. "or" "Memory is not a repradactive process rather a Constructive process." Discuss this statement.]

उत्तर :→ स्मरण के क्षेत्र में सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक अध्ययन इबिंगहॉस (Ebbinghaus) ने किया। उन्होंने अपना अध्ययन निरर्थक पदों पर किया। उन्होंने अपने अध्ययनों के आधार पर कहा कि स्मरण एक पुनरुत्पादक प्रक्रिया है, जिसमें सीखे गये या स्मरण किये गये विषय का प्रत्यावाहन ज्यों-का-त्यों होता है। अर्थात् पूर्व की अनुभूतियाँ या स्मृतियाँ उसी पुराने रूप में होती हैं जिस रूप में उनका शिक्षण हुआ था। सीखे गये विषय का स्मरण उनके मौलिक रूप में होता है। उसके रूप में किसी तरह का परिवर्तन नहीं होता है। इनके विचार से सीखने के बाद प्रत्यावाहन की गयी विषयों की मात्रा में कमी हो सकती है, लेकिन गुण में परिवर्तन नहीं होता है। इस सम्बन्ध में इबिंगहॉस ने निरर्थक पदों पर अध्ययन किया। उन्होंने निरर्थक पदों की सूचियों का स्मरण किया और विभिन्न समय अन्तरालों के बाद उसका प्रत्यावाहन किया तथा धारण की जाँच की। उन्होंने देखा कि सीखे गये विषय का प्रत्यावाहन उसी रूप में होता है, जिस रूप में विषय को सीखा जाता है। सिर्फ समय व्यवधान के कारण स्मृति-चिह्न कमजोर पड़ता है, जिससे सीखे गये विषय की मात्रा में कमी आती है, गुण में नहीं।

इबिंगहॉस (Ebbinghaus) के विचारों का बाद में चलकर जोरदार विरोध हुआ। बार्टलेट (Bartlett) ने इबिंगहॉस के विचारों पर तीरवी प्रतिक्रिया व्यक्त की और कहा कि स्मरण पुनरुत्पादक (Reproductive) नहीं, बल्कि सृजनात्मक [Constructive] प्रक्रिया है। बार्टलेट ने कहा कि इबिंगहॉस ने जो प्रयोग किया, वह दोषपूर्ण था। दैनिक जीवन की सामग्रियों के शिक्षण में उनके द्वारा अपनायी गई विधि वास्तविकता से काफी दूर है। निरर्थक पदों का वास्तविक जीवन में कोई महत्व नहीं होता है। यदि वे अपना प्रयोग सार्थक विषय पर करते हैं तो उन्हें कुछ निष्कर्ष प्राप्त होता।

Scanned with OKEN Scanner

इबिंगहॉस ने पूर्ण अधिकार विधि का धारण मापक के रूप में व्यवहार किया, जो स्वाभाविक जीवन से काफी हद तक भिन्न है। इबिंगहॉस के अनुसार स्मृति तभी सही मानी जाती थी, जब प्रयोज्य सीखे गये पदों को ठीक उसी प्रकार व्यक्त करता है। जिस रूप में सिखता है। जैसे ZEQ याद करने के बाद ZOQ प्रत्याव्हान करता है तो उसे पूर्णतः गलत माना जाता था, जबकि प्रत्याव्हान आंशिक सही है। इबिंगहॉस के प्रयोगों में उन्होंने खुद प्रयोज्य (Subject) का काम किया, जो गलत है। बार्टलेट ने कहा कि उससे निष्कर्ष की विश्वसनीयता कम हो जाती है।

उपर्युक्त त्रुटियों को ध्यान में रखते हुए बार्टलेट ने स्मरण के सृजनात्मक दृष्टिकोण को जन्म दिया। इनका मानना है कि हम जो कुछ स्मरण करते हैं, उसका प्रत्याव्हान करते समय विषय में कुछ परिवर्तन हो जाता है। प्रत्याव्हान में विषय के स्वरूप में मात्रात्मक तथा गुणात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन होते हैं। विषय की कथावस्तु बदल जाती है। कभी तो विषय को हम काट देते हैं तथा कभी अपनी तरफ से कुछ जोड़ देते हैं। बार्टलेट ने इस सम्बन्ध में बहुत सारा प्रयोग किया। उन्होंने विषय के रूप में कहानी तस्वीर आदि का इस्तेमाल किया। [illegible] ने अपनी प्रयोग में तीन विधियों का प्रयोग किया।

(1) क्रमिक पुनरुत्पादन विधि (Serial Reproductive Method)
(2) उत्तरोत्तर पुनरुत्पादन विधि (Successive Reproductive Method)
(3) एकाकी पुनरुत्पादन विधि (Single Reproductive Method)

क्रमिक पुनरुत्पादन विधि में एक प्रयोज्य को कहानी सुनाई गयी। उसने उसी कहानी को दूसरा व्यक्ति के सामने कहा। दूसरे ने तीसरे के सामने, इसी क्रम में अनेक प्रयोज्यों को कहानियाँ सुनाई गयी, तो पाया कि विभिन्न प्रयोज्यों ने एक ही कहानी का परिवर्तित रूप में प्रत्याव्हान किया। उसके गुण तथा मात्रा दोनों बदल गये थे। उस कहानी का बदला हुआ रूप प्रयोज्य ने व्यक्त किया। उत्तरोत्तर पुनरुत्पादन-विधि में एक प्रयोज्य को कहानी सुनायी गयी और उसका प्रत्याव्हान विभिन्न समय अन्तरालों पर लिया तो पाया गया कि कहानी में

परिवर्तन हो गया। एकाकी पुनरुत्पादन-विधि में कई प्रयोज्यों को एक साथ कहानी सुनाई गयी। फिर सभी से प्रत्याह्वान कराया गया तो पाया गया कि प्रयोज्यों द्वारा कहानी के किये गये प्रत्याह्वान में अन्तर हो गया।

रिबौंटो ने अपना दूसरा प्रयोग चित्र पर किया। प्रयोग में क्रमिक पुनरुत्पादन विधि का प्रयोग किया गया। एक प्रयोज्य को एक चित्र दिखाया गया। फिर उसे बिना देखे दूसरा चित्र बनाने को कहा गया। दूसरे चित्र को दूसरे प्रयोज्य को दिखलाया गया तथा उसे भी चित्र बनाने को कहा गया। इसी क्रम में कई प्रयोज्यों से चित्र बनवाया गया। उन्होंने पाया कि अन्तिम चित्र का मौलिक रूप साफ बदला हुआ था। इसी प्रकार, उत्तरोत्तर पुनरुत्पादन विधि, एकाकी पुनरुत्पादन विधि द्वारा भी चित्रों पर प्रयोग किया गया और पाया गया कि स्मरण सीखे गए विषय का फोटो कॉपी नहीं, बल्कि रचनात्मक होता है। अपने दोनों प्रयोगों में बार्टलेट ने पाया कि कहानी और चित्र के पुनरुत्पादन में प्रयोज्य आवश्यक बातों को छोड़ देता है तथा कुछ महत्वपूर्ण बातों को जोड़ देता है। इसीलिए कहानी या चित्र का मौलिक रूप बदल जाता है।

व्यक्ति जो कुछ भी प्रत्याह्वान करता है, उस पर व्यक्ति की संस्कृति, संस्कार, आवश्यकताएँ, रुचि, मनोवृत्ति आदि का प्रभाव देखा गया है। Form of reference संवेगात्मक स्थिति आदि भी प्रत्याह्वान को निर्धारित करते हैं। जो चीजें व्यक्ति की आवश्यकता, प्रेरणा, अभिरुचि एवं भाव के अनुकूल होते हैं। उनका प्रत्याह्वान करता है तथा जो उसके विपरीत होते हैं, उन्हें छोड़ देता है। फिर जो बातें व्यक्ति के Form of reference में सही आती हैं, उन्हें याद रखता है, बाकी को छोड़ देता है। प्रत्याह्वान पर उसकी संस्कृति, संस्कार एवं सामाजिक मूल्य का भी खास असर देखने को मिलता है। मर्फी (Murphy) ने तो यहाँ तक कहा है कि स्मरण में व्यक्ति अपने को आरोपित करता है। ब्लैक बर्न (Black Burn) ने अपने अध्ययन के आधार पर इस विषय की पुष्टि की है। उनका कहना है कि जिस विषय में हमारा इगो (Ego) संलग्न रहता है, उसका प्रत्याह्वान हम अच्छी तरह करते हैं, परन्तु जहाँ इगो संलग्न नहीं होता, उस विषय को छोड़ देते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

स्मरण के सम्बन्ध में और भी कई अन्य मनोवैज्ञानिकों ने अपने विचार व्यक्त किया है। आलपोर्ट एवं पोस्टमैन (Allport & Postman) ने भी स्मृति के रचनात्मक स्वरूप की पुष्टि अपने 'अध्ययनों' के आधार पर की है। इन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, प्रत्यावाहन में विषय के transformation में तीन प्रकार की प्रक्रियाएँ हैं :— सूक्ष्मीकरण, तीक्ष्णीकरण तथा समीकरण।

सूक्ष्मीकरण प्रक्रिया द्वारा सीखा गया विषय प्रत्यावाहन करते समय छोटा हो जाता है। सीखे गये विषय में जो बातें महत्वपूर्ण होती हैं, उसे ही याद किया जाता है। इस प्रकार सीखे गये विषय का संक्षिप्त रूप में प्रत्यावाहन करता है।

तीक्ष्णीकरण की प्रक्रिया में सीखे गये विषय का प्रत्यावाहन करते समय प्रभावपूर्ण बनाया जाता है। उनमें सैवेगात्मक शब्दों को जोड़ दिया जाता है और तब उसका प्रत्यावाहन करते हैं।

इसी प्रकार, समीकरण की प्रक्रिया में सीखे गये विषय के स्वरूप में परिवर्तन होता है। सीखे गये विषय को तर्कपूर्ण बना के उसका प्रत्यावाहन करता है।

इस प्रकार बार्टलेट ने यह सिद्ध कर दिया है कि स्मरण एक रचनात्मक मानसिक प्रक्रिया है ना कि पुनरुत्पादक।